श्री शंकर शिक्षायतन

वैदिक शोध केन्द्र

रजोवादविमर्श

प्रतिवेदन

पण्डित मधुसूदन ओझा प्रणीत सृष्टिविषयक १० वादग्रन्थों में **'रजोवाद'** एक अन्यतम ग्रन्थ है। पण्डित मधुसूदन ओझाजी ने अपने ब्रह्मविज्ञान सम्बन्धी ग्रन्थ के अन्तर्गत ऋग्वेद के नासदीय सूक्त एवं उसके आधार पर ब्राह्मणों, आरण्यकों एवं अन्य परवर्ती वैदिक ग्रन्थों में प्रतिपादित सृष्टिविषयक सन्दर्भों का आलोडन करते हुए उनको आधार बना कर सृष्टिविषयक पूर्वपक्ष के रूप में व्याख्यायित सदसद्वाद, आवरणवाद, व्योमवाद, अम्भोवाद एवं अपरवाद आदि मतों के स्पष्टतया प्रतिपादन हेतु १० वादग्रन्थों का प्रणयन किया है। इन्हीं दस ग्रन्थों में से एक रजोवाद नामक ग्रन्थ में सृष्टिप्रतिपादक पूर्वपक्ष में रूप में ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में उद्धृत सृष्टिविषयक रजोवाद का स्पष्टतया प्रतिपादन किया गया है। इसी ग्रन्थ को आधार बनाकर श्री शंकर शिक्षायतन (वैदिक शोध केन्द्र) नई दिल्ली द्वारा दिनांक २९ जून २०२१ को एक राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का समायोजन किया गया। यह समायोजन शिक्षायतन द्वारा सृष्टिविषयक वादग्रन्थविमर्श शृखला के अन्तर्गत प्रवहमान इस वर्ष का छठा समायोजन था।

रजोवाद ग्रन्थ में सृष्टिप्रतिपादक सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया है। इस ग्रन्थ के अध्याय विभाजन में सृष्टि का वाचक 'सर्ग' शब्द का प्रयोग किया गया है। तदनुसार प्रथम अध्याय का नाम आवपनसर्ग है। कारण स्वरूप बीज को स्थापित करना ही आवपन कहलाता है। इस अध्याय में ११ उपशीर्षकों के माध्यम से विषयवस्तु को स्पष्ट किया गया है। द्वितीय अध्याय का नाम विश्वसृट् सर्ग है। विश्वसृट् शब्द का अर्थ है विश्व को बनाने वाला तत्त्व। इस अध्याय में ८ उपशीर्षकों के माध्यम से विषय को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। तृतीय अध्याय का नाम भूतसर्ग है। यहाँ भूत से तात्पर्य जीव एव पञ्चभूत से है। इस अध्याय में ३८ उपशीर्षकों के माध्यम से भूतसर्ग विषयक विविध पक्षों को उद्घाटित किया गया है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में कुल ५७ उपशीर्षकों एवं कुल ९०१ कारिकाओं के माध्यम से ओझाजी ने सृष्टिविषयक रजोवाद का साङ्गोपाङ्ग विवेचन प्रस्तुत किया है।

रजोवादविमर्श विषयक इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में अपने व्याख्यान में **प्रो. विदेश्वर झा**, आचार्य, वेदविभाग, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा ने रजोवाद सम्बन्धी सिद्धान्तों का विश्लेषण करते हुए कहा कि रज के अनेक अर्थ संस्कृत कोशों में उपलब्ध होते हैं । एक अर्थ गुण का वाचक है जिसे शास्त्र में रजोगुण कहते हैं । रज का दूसरा अर्थ धूलि है। जैसे-'चरणरज' इस शब्द में प्रयुक्त रज धूलि का वाचक है। रज का एक अर्थ आदित्य होता है। पं. ओझा जी ने स्वयं रजोवाद ग्रन्थ में आदित्य के रूप में इसका उल्लेख किया है- **'आदित्य एषोऽस्ति रजश्च योऽसौ'** (रजोवाद, कारिका-५)। रज का एक अर्थ बृहस्पति भी है। इस प्रकार विषय को स्पष्ट करते हुए मुख्यवक्ता ने कहा कि ओझाजी ने अनेक प्रकार से रजतत्त्व को आधार बना कर अनेक अर्थों को उद्घाटित किया है। रजोवाद नामक ग्रन्थ के आदि में पं. ओझा जी ने सीमित तत्त्व को सृष्टि का कारण माना है। यह सीमित तत्त्व रज ही है। जैसे ही हम इस संसार को देखते हैं तो पृथ्वी सीमित दिखती है। उसी प्रकार अन्तरिक्ष एवं द्युलोक भी है। इससे यह सिद्ध होता है कि इस सृष्टि का कारण कोई मित तत्त्व ही है-

"यदत्र पश्यामि, मितं तदीक्ष्यते, पृथ्वी मिता, द्यौश्च मितान्तरं मितम् ।
मितं च गृह्णाति हि, गृह्णती मतिस्तस्मादमीषां मितिमस्ति कारणम् ॥"

- रजोवाद, कारिका-८

वे इस सीमित कारण वाले विचार को आधार बना कर अन्यदर्शन का खण्डन करते है जिससे अन्त में यह सिद्ध होता है कि सर्वशक्तिमान् अनन्त शक्ति तत्व ही इस सृष्टि को बनाता है।

विशिष्ट वक्ता **प्रो. राम कुमार शर्मा**, आचार्य, साहित्यविभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर ने अपने वक्तव्य में कहा कि रजोवाद ग्रन्थ में वर्णित भूतसर्ग सृष्टि की एक व्यापक रूपरेखा को प्रस्तुत करता है। पं. ओझा जी ने कहा है कि जो तत्त्व बहुत ही व्यापक या बड़ा होता है उसे भूमा कहा जाता है। भूमा का अर्थ अधिक है। जो भूमा है वह रजतत्त्व के गाँठ (ग्रन्थि) के रूप में विद्यमान रहता है। यही रज तत्त्व का गाँठ संपूर्ण सृष्टि को स्वयं में धारण किया हुआ है-

"भूमा बहुत्वं बहुभी रजोभिर्ग्रन्थिः कृतो भूम्नि धृतोऽयमर्थः ।
जग्राह भूमानमिदं ततस्तद्भूतं विदुर्भूतमिदं समस्तम् ॥"

- वही, कारिका-१८६

यह भौतिक जगत् तीन रूपों में ज्ञात होता है । सूक्ष्म रूप, समान रूप और स्थूलरूप । अग्नि के विकास से रजतत्त्व सूक्ष्मरूप को धारण करता है। सोम के आधिक्य से रजतत्त्व का स्थूलरूप बन जाता है। अग्नि और सोम की साम्यावस्था को समानरूप कहा जाता है-

"तच्चेह भूतं त्रिविधं समीक्षे, सूक्ष्मं समं स्थूलमिति प्रभेदात् ।
अग्नेर्बलीयस्त्ववशाद् विसारं रजांसि यान्तीति स सूक्ष्मभावः ॥

संकोचमायान्ति रजांसि सोमाधिक्यात्, ततः स्थौल्यमुदेति भावे ।
मध्या स्थितिश्चेदुभयोः, समाने बले तदा मध्यमभाव इष्टः ॥"

- वही, कारिका १८७-१८८

विशिष्ट वक्ता **डॉ. दिव्य चेतन ब्रह्मचारी**, सहायक आचार्य, व्याकरणविभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने रजोवादग्रन्थ में वर्णित आत्मकल्प पर अपना व्याख्यान दिया । उन्होंने कहा कि आत्मकल्प में प्रयुक्त कल्प शब्द का अर्थ सामर्थ्य अथवा सम्पत्ति या शक्ति है। जो वस्तु को ग्रहण अथवा खाता है वह अन्नाद कहलाता है उसी को अत्ता भी कहते हैं। जिसको ग्रहण करते हैं अथवा खाते हैं वह अन्न है। पं. ओझा जी ने अग्नि को अन्नाद कहा है एवं सोम को अन्न कहा है। यह प्रक्रिया सृष्टि में निरन्तर चलती रहती है। इस रजोवाद ग्रन्थ में अग्नि और सोम को केन्द्र में रख कर पं. ओझा जी ने विषय को स्पष्ट किया है-

"सोमोऽग्निरित्थं द्विविधं तु सर्वं रजोऽग्निरन्नादयमत्ति सोमम्।
उभे अपीमे रजसी स्वशक्तिव्यूहप्रभेदाद् बहुधा प्रतीमः ॥"

- वही, कारिका-२५२

रज तत्त्व अग्नि और सोम दोनों में स्थित है। वह रज तत्त्व एक अमृतरूप में और दूसरा मर्त्यरूप में रहता है। अग्नि प्राणमय है वही अमृत कहलाता है। सोम को भूतमय कहा गया है एवं वही मर्त्य है-

"यच्चामृतं प्राणमयं तमग्निं मर्त्यं विदुर्भूतमयं तु सोमम् ।
तदग्निसोमद्वयक्लृप्तमङ्गं नियम्य धत्ते तु रजोऽग्निरङ्गी॥"

- वही, कारिका-२५५

विशिष्ट वक्ता **डॉ. अरविन्द कुमार तिवारी**, संस्कृत प्रवक्ता, आदर्श वैदिक विद्यालय इण्टर कॉलेज, बागपत, उत्तर प्रदेश ने आत्मा के चार रूपों-महानात्मा, पित्र्यात्मा, दैवात्मा एवं सूत्रात्मा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य मधुसूदन ओझा जी ने महान् आत्मा उसे कहा है, जो पञ्च महाभूतों से निर्मित शरीर में प्रविष्ट होता है-

"यो भूतमात्रानुशयः प्रकृत्या सिद्धः सहैवोत्क्रमते परत्र ।
तस्याभिमान्यन्ययते स भूतात्मा तं महान्तं सयुजं च तं ज्ञम् ॥"

- वही, कारिका -४२१

पिता के रजोवीर्य से उत्पन्न पुत्र ही पित्र्यात्मा कहा जाता है। जिस आत्मा का प्रादुर्भाव यज्ञ से होता है वह दैवात्मा कहलाता है। जीव के शरीर में पाँच प्रकार के वायु रहते हैं। प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान । इन पाँचों वायु में व्यान वायु संपूर्ण शरीर में व्याप्त रहता है। इसी व्यान वायु को पं. ओझा जी ने सूत्रात्मा कहा है। इस प्रकार भूतात्मा, पित्र्यात्मा, दैवात्मा और सूत्रात्मा ये आत्मा के चार स्वरूप हैं।

विशिष्ट अतिथि **प्रो. पी.टी.जी.वाइ. सम्पतकुमाराचार्युलु**, आचार्य, न्यायविभाग, राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति ने अपने उद्बोधन में रजोवाद ग्रन्थ के विविध पक्षों को उद्घाटित किया । उन्होंने वैश्वानर के स्वरूप को प्रस्तुत करते हुए कहा कि पृथ्वीलोक, अन्तरिक्षलोक और द्युलोक ये तीनों मिल कर त्रिलोकी कहलाता है। पृथ्वी लोक में अग्नि रहता है। अन्तरिक्ष लोक में वायु रहती है और द्युलोक में

सूर्य रहता है। यह सिद्धान्त यास्क के निरुक्त में भी मिलता है। ओझा जी के इस वाक्य से यह स्पष्ट होता है कि अग्नि, वायु और सूर्य ही वैश्वानर है-

"पृथ्व्यन्तरिक्षं, द्युरिमानि विश्वान्यग्निश्च वायुश्च रविर्नरास्स्युः।
विश्वेषु तेषु क्रमशः स्थितास्ते विश्वानरास्तेन च ते प्रसिद्धाः ।।"

- वही, कारिका १३३

पं. ओझा जी ने वैदिकविज्ञान के अनुसार अग्नि को अङ्गिरा, वायु को विद्युत् और सूर्य को आदित्य कहा है। इन्हीं तीनों तत्त्वों के परस्पर संमिलन से संपूर्ण सृष्टि का विकास प्रतिक्षण होता रहता है।

"अत्राङ्गिरा अग्निरथैष वायुर्विद्युत् स गौरित्यभिधीयते च ।
सूर्योऽयमादित्य इति, त्रयाणामेषामनेके प्रभवन्ति भेदाः ॥"

- वही, कारिका-१३४

सारस्वत अतिथि **प्रो. महानन्द झा, आचार्य**, न्यायविभाग, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने रजोवादग्रन्थ में वर्णित प्रतानसूत्र पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि रज तत्त्व चार प्रकार के होते हैं- गुण, अणु, रेणु और स्कन्ध । यहाँ गुण का अर्थ बल है। बल को ही सामर्थ्य अथवा शक्ति कहते हैं। अणु एक विशेष तत्त्व है। रेणु शव्द से न्यायदर्शन में त्रसरेणु का ग्रहण किया जाता है। जिसमें छह अणु रहते हैं । त्रसरेणु को जैनदर्शन में पुद्गल कहा गया है। जैन दर्शन में पुद्गल से ही सृष्टि प्रक्रिया होती है। जैसाकि ओझाजी ने कहा है-

"रजांसि सर्वाणि गुणाणुरेणुस्कन्ध-प्रभेदात् प्रविदुश्चतुर्धा ।
गुणं बलं प्राहुरणुं विशेषं रेणुं त्रसं पुद्गलमाहुरन्त्यम् ॥"

- वही, कारिका- १९

चौथा तत्व स्कन्ध है। जिसका अर्थ शाखा होता है। शाखा को ही विस्तार कहते हैं। त्रसरेणु के समूह को स्कन्ध कहा गया है-

"अनेक-जाति-त्रसरेणुभिर्यः समुच्चयः शक्तिघनः प्रतीतः ।
स्कन्धः स योगेऽपि भवेद् बहूनां, न यत्र तत्वान्तरता-प्रपत्तिः ।।"

- वही, कारिक-२५

गुण, अणु, रेणु और स्कन्ध इन चारों को दो भागों में विभक्त किया गया है। गुण और अणु को हम आँख से देख नहीं सकते हैं जबकि रेणु और स्कन्ध को आँख से हम देख सकते हैं-

"गुणाणवो नेन्द्रियवृत्तियोग्याः स्कन्धांश्च रेणूंश्च समीक्षयन्ते ।"

- वही, कारिका २०

कार्यक्रम के अध्यक्ष **प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल**, समन्वय, श्री शंकर शिक्षायतन एवं संकाय प्रमुख, संस्कृत एवं प्राच्यविद्या अध्ययन संस्थान, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि सृष्टि का प्रारम्भ करने वाले तत्त्व का नाम रज है। ओझाजी ने अपने 'दशवादरहस्य' नामक ग्रन्थ में रजोवाद को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि रज ही सृष्टि का आरम्भण तत्त्व है। रजोवाद ग्रन्थ में एवं दशवादरहस्य में एक जैसा ही पद्य उपलब्ध होता है।

'आरम्भणं तत्त्वमिहोच्यते रजः।'

- दशवादरहस्य, रजोवादप्रकरण, कारिका १, रजोवाद, कारिका -४

पुराण में एवं वैदिकविज्ञान की दृष्टि से सात लोक हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं- भूर्लोक, भुवःलोक स्वर्लोक, महर्लोक, जनःलोक, तपोलोक और सत्यलोक। इन लोको में व्याप्त रहने वाला तत्त्व ही रज शब्द है अथवा यही रज की अवस्था है।

"सप्तैव लोका इह सन्ति यस्मिन् सप्तैव दृष्टा रजसामवस्थाः ।
स्युर्भुर्भुवः स्वश्च महर्जनश्च सत्यैव सत्यं खलु सप्त लोकाः ॥"

- दशवादरहस्य,रजोवादप्रकरण, कारिका३-४

पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक ये तीनों मिलकर त्रिलोक कहलाता है। यही तीनों लोक इस सृष्टि का उत्पत्तिस्थान है जिसे प्रभव कहा जाता है। इन्ही तीनों लोकें में यह सृष्टि स्थित रहती है, इसी को प्रतिष्ठा कहते हैं। अन्त में इन्हीं त्रिलोक में इस सृष्टि का प्रलय भी हो जाता है।

"यद्वाऽत्र लोकत्रय एव बोध्या द्यौरन्तरिक्षं पृथिवीति भेदात् ।
सर्वस्य चास्य प्रभवः प्रतिष्ठा परायणं ते त्रय एव लोकाः ॥"

- वही, कारिका-५

ओझा जी ने वैदिकविज्ञान को पुराणविद्या के आलोक में व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। प्रकृतिवाद का सिद्धान्त मारकण्डेयपुराण से सम्बन्ध रखता है। अग्नि-सोम का सिद्धान्त अग्निपुराण से सम्बन्धित है । अग्नि तत्त्व गतिशील रहता है और सोम तत्त्व स्थिररूप में रहता है। इन दोनों अग्नि और सोम में रहने वाला रज तत्त्व से ही यह संपूर्ण सृष्टि बनती है। यह मैथुनी सृष्टि नहीं है अपितु मानसी सृष्टि का द्योतक है। यह मानसी सृष्टि अव्यक्त रूप सृष्टि में चलती रहती है जिस का बोध सामान्य जन को नहीं होता है।

इस एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का संचालन डॉ. मणि शंकर द्विवेदी, वरिष्ठ शोध अध्येता, श्री शंकर शिक्षायतन ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. लक्ष्मी कान्त विमल, वरिष्ठ शोध अध्येता, श्री शंकर शिक्षायतन ने किया । कार्यक्रम का शुभारम्भ वेदाचार्य श्री आशुतोष कुमार पाण्डेय, वेदाध्यापक, श्री केदारनाथ गोयनका वेद विद्यालय, वाराणसी के वैदिक मङ्गलाचरण से एवं समापन शान्तिपाठ से हुआ। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अन्य प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों के शताधिक प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों ने अपनी सक्रिय सहभागिता से इस कार्यक्रम को सफल बनाया।